Vol 6 Issue 2 August 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | August - 2016

GRT Golden Research Thoughts

आधुनिक भौगोलिक चिंतन में फ्रीडरिक रैटजेल का योगदान

Dr. Satyabir Yadav, H.E.S.-1
Associate Professor of Geography & Incharge Government College for Woman, Pali (Rewari)

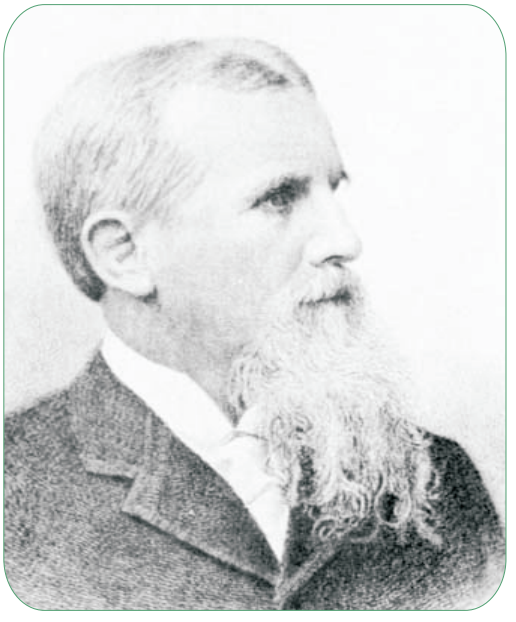

प्रस्तावना–

फ्रीडरिक रैटजेल का जन्म सन् १८४४ में प्रशिया (भूतपूर्व जर्मनी)के कार्लशू नगर में हुआ। उन्होने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा इसी नगर से प्राप्त की। युवा काल में ४ वर्ष तक रैटजेल ने एक रसायन प्रशिक्षु (Chemist Apprentice) के रूप में काम किया। उसके बाद उन्होने अपनी उच्च शिक्षा हाइडेलबर्ग (Heidelberg) बर्लिन (Berlin) तथा जेना विश्वविद्यालयों में प्राप्त की। वहां उन्होने प्राणीशास्त्र Zoology) तथा भूगर्भ शास्त्र का गहन अध्ययन किया। उनकी शिक्षा वैज्ञानिक चिन्तन के दौर में डार्विन की विकासवादी विचारधारा की पृष्ट भूमि में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम सन् १८६९ ई० में अपने प्राणीशास्त्र के अध्ययन के दौरान डार्विन के महत्वपूर्ण कार्यों की समालोचना की। म्यूनिख (Munich) में अध्ययन करने से पहले उन्होने अपने देश की ओर से फ्रांस जर्मनी के युद्ध के दौरान १८७० में २६ वर्ष की आयु में प्रशियन (जर्मन) सेना में नौकरी की थी। सन् १८७१ ई० में युद्ध समाप्ति के पश्चात नौकरी से अवकाश प्राप्त कर लिया।

लम्बी यात्राएं (Long Travels)

सन् १८७१ ई० में रैटजल का झुकाव पत्रकारिता की तरफ हो गया। सन् १८७४–७५ में उन्होने पत्रकार के रूप में यूरोप महाद्वीप के देशों, इटली, शिशली,(Sicily),हंगरी, (Hungry),आस्ट्रिया (Austria) तथा संयुक्त राज्य अमेरिका (U.S.A) मैक्सिको क्यूबा (Cuba) आदि देशों की यात्रायें की । वह अपनी लम्बी यात्राओं के आधार पर भौगोलिक अध्ययन करने के बाद धीरे–धीरे प्रकृति के वर्णन लिखने की कला में विशेषज्ञ हो गया तथा पुनः उसकी रूचि भूगोल की ओर हो गयी। रैटजल ने यात्राओं के द्वारा पृथ्वी के तत्वों के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करके वास्तविक तथ्यों के आधार पर भौगोलिक अध्ययन किया था उन्होनें अपने शब्दों में लिखा है– "I travelled, I sketched, I described. Thus , I was led to the deseription of nature." अपनी लम्बी यात्राओं के दौरान चीन,क्यूबा, मैक्सिको तथा केलीफोर्निया (U.S.A) के प्रवास के तथ्यों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की। उन्होनें ''चीनी प्रवास'' (Chinese Emigration) पर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया जिस पर उन्हें पी एच. डी. की डिग्री प्रदान की गयी रैटजेल सन् १८७६ में म्यूनिख विश्वविद्यालय में भूगोल के प्राध्यापक नियुक्त हो गए। वहां वे सन् १८८६ तक प्राध्यापक के रूप में सेवारत रहे। सन् १८८६ में रिचथोफेन (Richthofen) के लिपजिग (Leipzig) विश्वविद्यालय छोड़ने तथा बर्लिन विश्वविद्यालय में चले जाने के बाद रैटजल की नियुक्ति लिपजिग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर की गयी । यहां वे लगभग १८ वर्ष तक प्रोफेसर के पद पर सम्मान जनक रूप से मृत्युपर्यन्त १९०४ तक कार्य करते रहे। लिपजिग (Leipzig) विश्वविद्यालय मे उन्होनें वहां स्थापित ''ज्योग्राफिकल सोसायटी'' को अपने विशिष्ट कार्यो से विश्वस्तर पर सम्मानजनक स्थिति में पहुंचाने का श्रेय प्राप्त किया।

अमेरिकी भूगोलवेता कुमारी एलन चर्चिल सैम्पल (E.C. Semple) रैटजल की प्रधान शिष्या थी जो पर्यावरणवाद की कट्टर समर्थक थी।

रैटजल की भौगोलिक विचार धारा (Geographic thought of Ratzel)

रैटजेल की भौगोलिक विचारधारा को निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है:–

१.प्राकृतिक पर्यावरण (Natural Environment)- रैटजेल ने अपने एन्थ्रोपोज्योग्राफी के प्रथम खण्ड में प्राकृतिक पर्यावरण की शक्तियों को अधिक महत्वपूर्ण माना था। उसके अनुसार मानव वितरण अधिकतर भौतिक कारकों द्वारा नियन्त्रित होता है। रैटजेल का विचार था कि भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण का अध्ययन अवश्य किया जाना चाहिए। प्राकृतिक पर्यावरण में भू–तल जलवायु, वनस्पति, मिट्टी, वायुमण्डल, जलमण्डल , खनिज, जीवजन्तु आदि प्राकृतिक कारक मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।

२.सांस्कृतिक पर्यावरण (Cultural environ- ment)
रैटजल ने अपनी पुस्तक 'एन्थ्रोपोज्योग्राफी' के दूसरे खण्ड में सांस्कृतिक पर्यावरण के प्रभाव को भी महत्वपूर्ण माना था।

रैटजेल के लेख तथा ग्रन्थ– रैटजेल को प्रारम्भ से ही लेख तथा ग्रंथ लिखने की रूचि थी। उनकी महत्वपूर्ण रचनाएं निम्न लिखित हैं:

१. डार्विन के विकाशवादी सिद्धान्त की व्यवस्थित समालोचना, १८६९.
२. ''एक प्रकृतिवादी की यात्राएं (Travels of a Naturalist)
३. भू–मध्य सागरीय तट के जीव वैज्ञानिक पत्र, १८७० (Zoological letters from the shores of the mediterranean , 1870)
४.चीनी प्रवाह १८७६ (Chinese Emigration,1876)
५.उतरी अमेरिका का भौतिक एवं सांस्कृतिक भूगोल–दो खण्डो में १८७८ तथा १८८०
६.एन्थ्रोपोज्योग्राफी (Anthropogeographie)प्रथम खण्ड– An introduction to the Application of Geography to history.१८८२
द्वितीय खण्ड– The geographical distribution of mankind .१८९१
७.वोल्कर कुण्डे (volkerkunde) तीन खण्ड प्रथम खण्ड – १८८५, द्वितीय खण्ड–१८८८ इसका अग्रेजी अनुवाद The History of mankind हैं।
८.Vergleichende Erdkunde. १९०१ . १९०२ (Earth and life: Compartative Geographie)
९.politische Geographie .१८९७ (political Geography. १८९७) (प्रथम खण्ड)
१०.जर्मनी 'ड्यूशलैण्ड' १८९८
११.political Geography.१९०३ (द्वितीय खण्ड)

उपरोक्त लेखों तथा ग्रन्थों के अतिरिक्त रैटजल ने समाज शास्त्र, भू गर्भ शास्त्र तथा भू विज्ञान पर भी कई लेख लिखे।

रैटजेल पर डार्विन के विचारों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। डार्विन ने अपनी पुस्तक ''ओरिजिन ऑफ स्पीसीज'' में बताया की प्रत्येक जीव को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस क्रिया में जो प्राणी या जीव वातावरण के अनुसार अपने आप को अनुकुल बनाता है वह जिन्दा रहता है तथा जो वातावरण के अनुसार अपने आप को नहीं ढाल सकते वे नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने प्राकृतिक पर्यावरण के अनुसार अनुकूलन करता है ओर उनसे लाभ उठाता है तथा पूर्णत प्रकृति पर आश्रित है। अतः रैटजल ने प्राकृतिक पर्यावरण को अत्यधिक महत्वपूर्ण व प्रधान माना है। वह नियतिवाद ;क्मजमतउपदपेउ ब्द का पक्षधर था। उसके अनुसार मानव प्रकृति की सहायता के बिना असहाय है। उसकी नियतिवाद की विचारधारा का प्रभाव फ्रांस , ब्रिटेन तथा यू०एस०ए० में भी पड़ा।

रैटजेल की लेखन प्रतिभा अद्वितीय थी। उनकी रचनाओं में एन्थ्रोपोज्योग्राफी, वोकर कुण्डे (VOLKERKUNDE) तथा राजनैतिक भूगोल (politisehe Geographie, १८९७) ग्रन्थ सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

रैटजल के अनुसार भू–तल पर मानवीय क्रियाओं के निर्धारण में पर्यावरण के निम्नलिखित चार प्रभावी समूह महत्वपूर्ण हैं :–
१.शारीरिक प्रजातीय लक्षणों वाले प्रभाव।
२.मनोवैज्ञानिक प्रभाव।
३.जनसमूह की सामाजिक आर्थिक गतिशीलता पर प्राकृतिक शक्तियों के भौगोलिक प्रभाव।
४.मानव के वितरण और गतिशीलता को नियन्त्रित एवं निर्धारित करने वाले प्रभाव।

उपरोक्त चार प्रभावी समूह प्राकृतिक पर्यावरण से ही प्रभावित होते हैं अतः रैटजल ने मानव को भौतिक प्रर्यावरण की उपज माना है। वे कठोर निश्चयवादी भूगोल वेता थे। उनके अनुसार , "People should live on the land fate has given them they should die there submitting to law"

''मानव को भूमि पर निवास करना चाहिए,प्रकृति प्रदत ऐसी भूमि पर ही भाग्य के अधीन होकर उन्हें मृत्यु का वरण करना चाहिए।''

उनका दूसरा खण्ड "The Geographical Distribution of mankind" सन् १८९१ में प्रकाशित हुआ। इस खण्ड में उन्होने मानव समुदाय के भौगोलिक वितरण का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में उन्होने मानव भूगोल के संकल्पनात्मक पक्ष की नीवं रखी। अब उनका ध्यान प्रकृति के अध्ययन से मानव के अध्ययन की ओर गया। उन्होने धरातल पर बसे हुए (ecumene) एवं निर्जन प्रायः (Non-ecumene)प्रदेशों की सीमा निश्चित की । जल संसाधन (महासागर ,सागर आदि) असभ्य मानव की गतिशीलता में बाधक थे परन्तु मानव के नौवहन सीखनेके बाद वही बाधा उसके लिए महान व्यापारिक जल मार्ग बन गए। प्राचीन समय में नदियां एवं दलदल विकास में बाधक थे और नदियों में बाढ से अत्यधिक जन धन की हानि होती थीं। आज नदियों पर बाधं

बनाकर उनके पानी को एकत्रित करके जलविद्युत निर्माण के साथ साथ नहरों द्वारा सिचाई के लिए पानी सूखेक्षेत्रों में पहुचाया जाता है ताकि कृषि का विकाश किया जा सके।

रैटजेल के एन्थ्रोपोज्योग्राफी के द्वितीय खण्ड में तीन प्रमुख तथ्यों का वर्णन है।
१.धरातल पर मानव समूहों का वितरण इसके अन्तर्गत विभिन्न मानव समूहों मानव अधिवासों, प्रजातियों, राष्ट्रीयता, धार्मिक आधार पर मानव समूहों का वर्णन है।
२.उपरोक्त वितरण पर प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव का वर्णन है।
३.प्राकृतिक पर्यावरण का मानव एवं समाज पर प्रभाव विशेष रूप से धरातल एवं जलवायु के प्रभाव का वर्णन है।

वोकर कुण्डे (Volker kunde). रैटजल ने यह पुस्तक म्यूनिख में लिखी। यह पुस्तक सन् १८८५ से १८८८ के बीच तीन खण्डों में प्रकाशित की गयी । इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद History of Mankind के नाम से किया गया । इसमें मानव जाति के इतिहास का वर्णन है।

राजनीतिक भूगोल (Politische Geographie). रैटजल ने पहली बार मानव भूगोल लिखने के बाद राजनीतिक भूगोल लिखा । उन्होने महसूस किया की भूगोल की सभी शाखांओं में राजनीतिक भूगोल सबसे अधिक पिछड़ा हुआ हैं। राजनीति शास्त्र के विद्वान अपनी रचनाओं में भौगोलिक प्रभाव को कोई महत्व नहीं देते। जबकी राजनीतिक दशाओं के पीछे भौगोलिक पर्यावरण के तत्वों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। रैटजल के अनुसार एक राज्य के लिए निम्नलिखित मूल संकल्पनाएं आवश्यक हैं :-

१.राज्य की अपनी प्राकृतिक सीमाएं होती है। तथा धरातल पर एक निश्चित संगठन युक्त विस्तृत क्षेत्र है।
२.प्रत्येक राज्य में धरातल पर जनसंख्या निवास करती हैं।
३.राज्यों के विकास एवं संकुचन को ध्यान में रखते हुए राज्यों के जैविक सिद्धान्त को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।
रैटजल का ''राज्य का जैविक सिद्धान्त'' (Organic Theory of State) pkYlZ MkfoZu ds fl)kUrksa ls izHkkfor FkkA mlds vuqlkj 'Geographical and still more political expansion have all the distinctive characteristics of a body in motion which expand and contract alternatively in regression and progression'

अतः राज्यों का अपने पड़ोसी देशों की ओर विस्तार करना उसकी आवश्यक घटनाहोती है जब तक की उसे प्रभावी विरोध का सामना न करना पड़े। राज्य के जैविक सिद्धान्त से नवीन संकल्पना लेबेन्सराम (Labensraum) की शुरूआत हुई।

रैटजल की मान्यता थी की उपर्युक्त तीनों भौगोलिक तथ्यों द्वारा राज्यों के लक्षण एवं विकाश निर्धारित होते हैं। जर्मनी में विस्तारवाद एवं विश्व साम्राज्य का चिन्तन रैटजल के सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। विश्वविख्यात राजनीतिक भूगोवेता एवं कूटनीतिज्ञ होशफर और ब्रिटेन के मैकिण्डर भी रैटजल के चिन्तन से अत्यधिक प्रभावित हुए।

रैटजल की राजनीतिक भूगोल की पुस्तक लेबेंसराम की संकल्पना पर आधारित थी। उसके अनुसार राज्य को जीव की भांति विकसित होना चाहिए। उनका विचार था कि जिस तरह किसी जीव का शरीर विकसित होता है उसी तरह राज्य का क्षेत्रफल भी विकसित होना चाहिए। यूरोपीय राज्यों को समुद्र पार क्षेत्रों में जाकर अपने राज्य का विस्तार करना चाहिए। रैटजेल ने राजनीतिक भूगोल का राजनीति में व्यावहारिक प्रयोग किया तथा राजनीतिक भूगोल को पूर्णतया पोषित किया जिस कारण उन्हें राजनीतिक भूगोल का पिता भी कहते हैं।

रैटजल का राजनीतिक ग्रन्थ निम्नलिखित आठ इकाइयों में विभाजित है:-
१.राज्य एवं भूतल की निर्भरता।
२.राज्यों की गतिशीलता एवं उनका विकास।
३.राज्यों का भू तल पर विस्तार।
४.राज्यों के वर्गीकरण में भौगोलिक स्थिति की संकल्पना।
५.क्षेत्रफल ;तंनउद्ध की संकल्पना।
६.राज्यों की सीमायें;ळतममद मदद्ध
७.राज्यों के विकाश में जल राशियों की महत्ता।
८.राज्यों के विकास में पर्वतों एवं मैदानों का महत्व।

रैटजल ने नगरों को राजनीतिक शक्ति का क्षेत्र माना है और मार्गों को उन्होनें राज्य रूपी शरीर की रक्त वाहिनी नसें बताया।

रैटजेल का भौगोलिक योगदान (Geographical Contribution of Ratzel) . रैटजेल के प्रमुख भौगोलिक योगदान निम्नलिखित है:-

१. प्राकृतिक पर्यावरण (Natural environment):- रैटजेल ने अपने ग्रन्थएन्थ्रोपोज्योग्राफी के प्रथम खण्ड में प्राकृतिक

पर्यावरण की शक्तियों को सर्वोपरी माना था। उसके अनुसार मानव वितरण ज्यादातर प्राकृतिक कारकों द्वारा ही नियन्त्रित होता है। रैटजल का विचार था कि भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण का अध्ययन अवश्य किया जाना चाहिए। प्राकृतिक पर्यावरण में भू-तल , जलवायु मिट्टी वनस्पति, खनिज पदार्थ जीव जन्तु आदि भौतिक कारक मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। वे डार्विन के विकाशवादी सिद्धान्त से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होनें प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों का मानव पर प्रभाव का विस्तार से पता लगाया। रैटजेल के अनुसार मानव भूगोल को भौतिक भूगोल की पृष्ट भूमि के आधार पर ही ठीक -ठीक समझा जा सकता है। उनके अनुसार मानव एवं प्रकृति के बीच गहरा अन्तर्सम्बन्ध होता है उन्होने मानव को प्राकृतिक पर्यावरण की उपज माना। उसने अपने एन्थ्रोपोज्योग्राफी के प्रथम खण्ड में कठोर निश्चयवाद का अनुसरण किया। उनके शब्दों में "a people should live on the land fate has given them they should die there submitting to law."(मानव को भूमि पर निवास करना चाहिए,भाग्य (प्राकृतिक पर्यावरण) द्वारा दी गइ ऐसी भूमि पर (प्राकृतिक) कानून के अधीन होकर उन्हें मृत्यु का वरन् करना चाहिए।

२.सांस्कृतिक पर्यावरण ;बनसजनतंस म्दअपतवदउमदजद्ध.

रैटलेल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक एन्थ्रोपोज्याग्राफी (Anthropogeograply) के द्वितीय खण्ड में सांस्कृतिक पर्यावरण के प्रभाव को भी महत्वपूर्ण माना। उसने दूसरे खण्ड में मानव समुदाय के तात्कालिक विश्व वितरण का विस्तार से वर्णन किया। उन्होनें धरातल पर बसे हुए ;मबनउमदमद्ध एवं निर्जन (Non-ecumene) प्रदेशों की सीमा निश्चित की। उन्होने प्राचीन सभ्यता के केन्द्रों के उद्भव एवं विकास में जलवायु के प्रभाव को महत्वपूर्ण बताया था। लेकिन अब मानव ने अपने बौधिक विकास से प्रकृति के रहस्यों को समझना सीख लिया है ओर अपनी बुद्धी के बल से प्राकृतिक तत्वों का लाभ उठाता है। जल राशिया जैसे समुद्र महासागर आदि असभ्य मानव की गतिशीलता में बाधक थी लेकिन ज्यों ही मानव ने नौवहन सीख लिया तो यही जल राशियां (water bodies) जैसे समुद्र ,महासागर आदि उसके लिए सस्ते महान जलमार्ग वरदान बन गये। प्रारम्भ में नदियों बाढ लाती थी। और विकाश में बाधक मानी जाती थी लेकिन अब उन पर मानव द्वारा बड़े-बड़ेबांध बना कर बाढ पर नियन्त्रण करना सीख लिया है। अब यदि प्राकृतिक वातावरण मानव के कार्यो में बाधक बनता है तो मनुष्य अपनी वैज्ञानिक तकनीकों एवं बौधिक कौशल से उन्हें दूर कर उनका उपयोग करता है। कृषि कार्य प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति द्वारा प्रभावित होता है। लेकिन मानव ने अपने बौधिक ज्ञान से शुष्क क्षेत्रों में सिचाई की सुविधा प्रदान कर अपनी भूमिका को श्रेष्ठ सिद्ध किया है ।

रैटजेल का विचार था कि मानव के रीतिरिवाज, रहन-सहन वेश भूषा , संस्कृति, भाषा पद्धति तथा उद्योग धन्धों पर सांस्कृतिक पर्यावरण (cultural environment) का व्यापक प्रभाव पड़ता है। अतः रैटजेल ने सांस्कृतिक लक्षणों के प्रसार (Diffusion of culture) पर अधिक बल दिया। हार्टशोर्न के शब्दों में 'रैटजेल ने अपने ग्रन्थ एन्थ्रोपोज्याग्राफी के दूसरे खण्ड में अपनी भौगोलिक विचारधारा को बदल कर केवल प्राकृतिक पर्यावरण को ही पूर्ण निर्धारक न मानते हुए सांस्कृतिक पर्यावरण को भी महत्वपूर्ण माना था'।

३.मानव प्रकृति अन्तर्सम्बन्ध (Man-nature interrelationship)

रैटजेल की भौगोलिक संकल्पनाओं में मानव-प्रकृति अर्न्तसम्बन्ध की अवधारणा महत्वपूर्ण है। उनहोनें प्राकुतिक पर्यावरण को मानवीय जीवन में सबसे प्रभावशाली तत्व माना था इसलिए उनहें तातावरण निश्चयवाद का प्रतिपादक भी माना जाता है रैटजेल के अनुसार मानव अपने जीवन के विकास की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर अन्त तक प्रकृति पर ही निर्भर रहता है। अतः रैटजल ने एन्थ्रोपोज्योग्राफी के प्रथम खण्ड में प्राकृतिक पर्यावरण का मानव पर प्रभाव की व्याख्या की है जबकि दूसरे खण्ड में प्रकृति पर मानव के प्रभाव का उल्लेख करते हुए मानव के भौगोलिक वितरण का वर्णन है। जनसंख्या के वितरण , मानवीय बस्तियों सड़क निमार्ण , औद्योगिक विकास , कृषि विकास आदि प्रकृति पर मानवीय प्रभाव के उदाहरण है। इस प्रकार रैटजेल ने मानव तथा प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धेां का विश्लेषण किया है।

४.पार्थिव एकता (Terrestrial units)-

रैटजेल ने सबसे पहले पार्थिव एकता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इस विचारधारा के अनुसार विश्व के सभी भौगोलिक तत्व चाहे जड़ हों या चेतन हों एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। उनका अलग से अध्ययन करना सम्भव नही है। समस्त पृथ्वी एक समाकलित इकाई (integrated whole) है। विश्व की बड़ी नदियों का जल बहकरमहासागारों में चला जाता है तथा विभिन्न महासागरों का जल आपस में मिलकर प्रकृति की एकता के दर्शन कराता है।

५.लेबेंसरॉम की अवधारणा (Concept of Lebensraum)

रैटजेल पृथ्वी को एक जैविक इकाई मानते थे। उन्होनें राज्यों को एक जीव माना है उनके अनुसार, 'लेबेंसरॉम वह भौगोलिक क्षेत्र है जिसमें जीव विकसित होते हैं (Lebensraum is that geographical area within which living organism develop.) इसे संक्षेप में जीवित स्थान भी कहते हैं।

लेबेंसरॉम (Labensraum) दो प्रकार का होता है, (१) सामान्य लेबेनसराम तथा(२) प्राकृतिक लेबेंसरॉम। स्मिथनेर ने इसे मानव के उन सांस्कृतिक एवं आर्थिक कार्यो से युक्त क्षेत्रों को माना है जो वे अपने निकटवर्ती निवास क्षेत्र की पृष्ट भूमि में सम्पन्नता प्राप्त करते हैं। यह संकल्पना, मानव समाज के स्थानिक संगठन एवं उसकी प्राकृतिक अवस्थिति के सम्बन्धों में प्रकट होती

है। रैटजेल के अनुसार व्यापारिक क्षेत्र, ऐतिहासिक क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र एवं व्यापारिक क्षेत्रों के सम्बन्ध आदि जैविक संगठन लेबेन्सरॉम की संकल्पना के अच्छे उदाहरण हैं।

रैटजैल का मानव भूगोल और इसकी शाखाओं के प्रारम्भिक विकास में उनका अत्यधिक योगदान रहा। जर्मनी में उसे राजनीतिक भूगोल का पिता माना जाता है।

ब्रूंश ने रैटजेल के कार्यो की सराहना करते हुए उसे नवीन विचारों का जनक बताया। टिकिन्सनने रैटजेल को मानव भूगोल के विकाश के लिए एकमात्र विद्वान माना है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भूगोल के विकास में प्रो. रैटजेल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने मानव भूगोल एवं उनकी शाखाओं की स्थापना की जिसे भुलाया नही जा सकता।

६. एकुमीनी की संकल्पना (Concept of Acumene)-रैटजेल के अनुसार वह क्षेत्र जहां मानव निवास करता है, एकुमीनी कहलाता है। एकुमीनी में मानव निवास का क्रोड उसका सीमान्त है जो किसी राज्य या देश की सीमा की तरह स्पष्ट नहीं है। इन्होनें एकुमीनी की संकल्पना में एकुमीनी में निवास्य क्षेत्र तथा मानव रहित क्षेत्र को नान –एकुमीनी(Non-ecumene) क्षेत्र से सम्बोधित किया। रैटजल ने स्पष्ट किया कि एकुमीनीके क्रोड में विकसित जनसमूह निवास करते है। जबकि सीमान्त पर आदिवासी जन जातिया रहती हैं। उदाहरण के लिए उत्तरी अमेरिका के सीमान्त पर आदिवासी जनजातियों रहती हैं, आस्ट्रेलिया की दक्षिणी सीमान्त पर टसमानी जनजाति का निवास है तथा अफ्रिका की दक्षिणी सीमा पर बुशमैन–हाटेन्टाट जनजातियां रहती हैं। भारत इस संकल्पना का अपवाद है जहां जनजातियों सीमानत में नहीं रहती बल्कि भारत के मध्य भाग में गोंड भील जैसी जनजातियां मिलती हैं। भारतीय जनजातियां अभ्यारण्य संस्कृति के कारण मध्य क्षेत्र में पायी जाती हैं। जो एक विशिष्ट जीवन पद्धति को प्रदशित करती हैं जो एकाकी जनसमूह का प्रतीक नहीं है।

REFERENCE :-

1.Ratzel. F. 1882 Anthropogeographie Vol.1. Stuttgart: J. Engethorn.
2.Ratzel. F. 1891 Anthropogeographie Vol.2. Stuttgart: J. Engethorn.
3.Ratzel. F. 1897 Politische Geographie, Berlin: R.Oldenbourg..
4.Mazid Hussain, Evolution of geographic thought Rawat Publication, Jaipur 1984.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org